The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में आत्म-प्रत्यय का महत्व : एक अध्ययन

मनोज कुमार

शोधार्थी, डिपार्टमेंट ऑफ पेडागॉजिकल साइंसेज, शिक्षा-संकाय, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा (उ०प्र०)

प्रोफेसर अरूण कुमार कुलश्रेष्ठ

डिपार्टमेंट ऑफ पेडागॉजिकल साइंसेज, शिक्षा-संकाय, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा (उ०प्र०)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 22-05-2025

Published: 10-06-2025

Keywords:

शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया एवं आत्म-प्रत्यय

ABSTRACT

वर्तमान वैज्ञानिक और भौतिकवादी युग में प्रत्येक व्यक्ति प्रतिस्पर्धा की दौड़ में व्यस्त है, ऐसे समय में विज्ञान और आध्यात्म के बीच संतुलन बनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। आज की आधुनिक जीवनशैली में विज्ञान का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, परन्तु इसके साथ ही व्यक्ति के अन्दर आध्यात्मिकता का अभाव भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसका मूल कारण है आत्म-प्रत्यय का अभाव। आत्म-प्रत्यय एवं शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक शिक्षित व्यक्ति का आत्म-प्रत्यय ही उच्च हो सकता है या फिर एक उच्च कोटि का आत्म-प्रत्यय वाला व्यक्ति शिक्षा में सफल हो सकता है। उच्च आत्म-प्रत्यय वाला व्यक्ति का मूल्य भी उच्च हो सकता है, क्योंकि जो स्वयं को समझता है, वह अपने मूल्य को समझा पायेगा। वहीं विद्यार्थी जो आत्म-प्रत्ययी तथा उच्च मूल्य वाला हो, वह शिक्षा के क्षेत्र में निश्चित रूप से

सफलता प्राप्त कर सकता। विद्यार्थी में आत्म-प्रत्यय का विकास विद्यालय वातावरण में अधिक होता है। शिक्षक अपने प्रभाव के द्वारा विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को विकसित करने में सहायक होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आत्म-प्रत्यय की अवधारणा, आत्मप्रत्यय के तत्व एवं आत्मप्रत्यय के महत्व की चर्चा की गई है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15657335

प्रस्तावना :-

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा घर, विद्यालय तथा अन्य स्थानों पर होती रहती है। शिक्षा के माध्यम से होने वाले विकास के बल पर व्यक्ति अपने व्यवहार तथा विचारों में परिवर्तन करता रहता है। बालक के व्यक्तित्व में प्राकृतिक तथा वातावरणीय दोनों गुणों का समावेश होता है। बालक की जन्मजात योग्यताओं के अलावा वातावरण भी बालक के विकास को प्रभावित करने का महत्वपूर्ण कारक है। आत्म प्रत्यय एवं विद्यालय का घनिष्ठ सम्बन्ध है। बालक में आत्म-प्रत्यय का विकास विद्यालय वातावरण में अधिक होता है। वातावरणीय अनुभव व शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया बालक के आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करती है। शिक्षक अपने प्रभाव के द्वारा विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को विकसित करने में सहायक होता है। आत्म-प्रत्यय बालक के व्यवहार एवं चिन्तन आदि को प्रभावित करता है। आत्म-प्रत्यय का तात्पर्य एक बालक स्वंय के विषय में क्या अनुभव करता है या मत रखता है, से होता है। किसी भी बालक के व्यवहार के लिये आत्म-प्रत्यय एक महत्वपूर्ण कुंजी है। विभिन्न बालक बालिकाओं के एक ही वस्तु के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न प्रत्यय भी हो सकते हैं उच्च व सकारात्मक आत्म-प्रत्यय वाले विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि भी

उच्च होगी । अतः आत्म-प्रत्यय का शैक्षिक उपलब्धि से भी गहरा सम्बन्ध होता है । उच्च व सकारात्मक आत्म-प्रत्यय शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन को उत्तम कर सकता है ।

आत्म-प्रत्यय का उद्भव व्यक्तित्व के आरंभिक सिद्धान्तों से हुआ है । सर्वप्रथम रेन डेसकार्टेस ने व्यक्ति को स्वयं के अस्तित्व की जागरूकता के संदर्भ में चर्चा की थी विलियम जेम्स ने अपनी पुस्तक प्रिन्सीपल्स ऑफ साइक्लोजी में सन् 1890 में इस धारणा का सर्वप्रथम विवरण प्रस्तुत किया था । 'आत्म' उन सब का पूर्ण योग है जिसे मनुष्य अपना कहकर पुकारता है यथा- उसका शरीर उसके गुण तथा उसकी योग्यताएँ उसकी भौतिक संपत्ति उसका परिवार मित्र एवं शत्रु तथा व्यवसाय एवं अन्य काम धन्धे । इस प्रकार जेम्स ने आत्म के चार घटक बतायें हैं- भौतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं शुद्ध अहम् ।

साहित्यावलोकन :-

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में साहित्यावलोकन निम्न प्रकार है-

सैनी, राम प्रकाश (2018). द्वारा ''बी0एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) के आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया । इस अध्ययन का उद्देश्य बी0एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना, बी0एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय (बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0) शिक्षकों के मध्य आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना था । निष्कर्ष इस प्रकार है बी0एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) का आत्म प्रत्यय औसत पाया गया, बी0एड0 एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों के आत्म-प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया।

सुमी, वी. एस. (2019). द्वारा ''सेल्फ-कांसेप्ट रिसर्च विद टीचर ट्रेनीज: एन इन्वेस्टिगेशन'' विषय पर अध्ययन किया । इस अध्ययन का उद्देश्य बी.एड प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना, लिंग

के सन्दर्भ में बी.एड प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय में अन्तर ज्ञात करना था। निष्कर्ष इस प्रकार है बी.एड प्रशिक्षणार्थियों का आत्म प्रत्यय औसत पाया गया, लिंग के सन्दर्भ में बी.एड प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

हेरेरा, लुका एट अल. (2020). द्वारा ''एकेडमिक अचीवमेंट, सेल्फ-कांसेप्ट, पर्सनैलिटी एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस इन प्राइमरी एजूकेशन. एनालिसिस वय जेंडर एण्ड कल्चरल ग्रुप'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग व सांस्कृतिक समूह के आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि, आत्म-प्रत्यय, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि लिंग के आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि, आत्म-प्रत्यय, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है सांस्कृतिक समूह के आधार पर प्राथमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि, आत्म-प्रत्यय, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है प्राथमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि, आत्म-प्रत्यय, व्यक्तित्व व संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक सहसम्बन्ध है।

सुधा (2021). द्वारा ''सेल्फ-कांसेप्ट ऑफ टीचर ट्रेनीज स्टडींग इन प्राइवेट डाइटर्स इन दिल्ली स्टेट'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य दिल्ली राज्य के निजी डाइटर्स में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना था। निष्कर्ष इस प्रकार है आत्म प्रत्यय के विभिन्न आयामों के आधार पर दिल्ली राज्य के निजी डाइटर्स में अध्ययनरत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों का औसत आत्म प्रत्यय पाया गया।

नवोसु, किंग्सले चिनजा एण्ड वाहली, डब्ल्यू.पी. (2021). द्वारा ''टीचर सेल्फ-कांसेप्ट एण्ड इट् एसोसिएशन विद विलिंग्नेस टू इंक्लूड चिल्ड्रन विद स्पेशल नीडर्स इन रेगुलर क्लासेसः टीचर एंपैथी एज ए

मेडिएटर'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों के आत्म प्रत्यय, इच्छा शक्ति व सहानुभूति का अध्ययन करना, शिक्षकों के आत्म प्रत्यय के संबन्ध में इच्छा शक्ति व सहानुभूति का अध्ययन करना, शिक्षकों की सहानुभूति के संबन्ध में आत्म प्रत्यय व इच्छा शक्ति का अध्ययन करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षकों के आत्म प्रत्यय के संबन्ध में इच्छा शक्ति व सहानुभूति में सार्थक संबन्ध है, शिक्षकों की सहानुभूति के संबन्ध में आत्म प्रत्यय व इच्छा शक्ति में सार्थक संबन्ध है व दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते है।

डेजी, आर एण्ड सेल्वी, पी. मुथुपंडी (2022). द्वारा ''ए स्टडी ऑन सेल्फ-कांसेप्ट ऑफ टीचर एजुकेशन प्रोग्राम अमंग बी.एड. ट्रेनीज'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के बी.एड प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना, लिंग, निवास स्थान के सन्दर्भ में बी.एड प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय में अन्तर ज्ञात करना था। निष्कर्ष इस प्रकार है शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के बी.एड प्रशिक्षणार्थियों का आत्म प्रत्यय औसत पाया गया, लिंग, के सन्दर्भ में बी.एड प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। निवास स्थान के सन्दर्भ में बी.एड प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया।

सिंह, आस्था एण्ड गुप्ता, लोकेश (2022). द्वारा ''आईडेंटिफिंग दी फैक्टरर्स ऑफ सेल्फ-कांसेप्ट एण्ड दी इफेक्ट ऑफ दी कोविड-19 सिचुएशन ऑन द्इज फैक्टरर्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य आत्म से सम्बन्धित 36 वस्तुओं की पहचान करके आत्म अवधारणा की संरचना को ज्ञात करना था। निष्कर्ष इस प्रकार है आत्म से सम्बन्धित स्वास्थ्य व जीवनशैली महत्वपूर्ण तत्व है आत्म अवधारणा की संरचना के तत्वों में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

आर, नटराजा (2023). द्वारा ''ए स्टडी ऑन दी सेल्फ-कांसेप्ट ऑफ सेकेन्डरी टीचर ट्रेनीज'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य लिंग, स्थानीयता, परिवार, स्कूल स्तर एवं जिला स्तर के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय का अध्ययन करना था। निष्कर्ष इस प्रकार है माध्यमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों का आत्म प्रत्यय औसत पाया गया, लिंग, स्थानीयता, परिवार, स्कूल स्तर एवं जिला स्तर के सन्दर्भ में माध्यमिक स्तर के शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के आत्म प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

जावेद, जरताशिए कयनात एट अल. (2024). द्वारा ''इफेक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ-कांसेप्ट ऑन एकेडमिक परफॉर्मेंसः ए सिस्टमैटिक रिव्यु ऑफ क्रॉस कल्चर रिसर्च'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन करना, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय भूमिका ज्ञात करना था। निष्कर्ष इस प्रकार है विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, आत्म प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म प्रत्यय का सार्थक प्रभाव पाया गया।

मुनोहसामी, तुलसीमाणी एट अल. (2025). द्वारा ''एक्सप्लोरिंग सेल्फ-एफिकसी, सेल्फ-कांसेप्ट एण्ड सेल्फ-एस्टीम इन ऑनलाइन ट्रेनिंगः ए स्टडी ऑफ ट्रेनी् टीचर डायनामिकर्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागीओं की आत्म-प्रभावकारिता, आत्म-प्रत्यय एवं आत्म सम्मान में संबन्ध का अध्ययन करना था। निष्कर्ष इस प्रकार है ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागीओं की आत्म-प्रभावकारिता, आत्म-प्रत्यय एवं आत्म सम्मान में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया,

प्रतिभागीओं की आत्म-प्रभावकारिता एवं आत्म सम्मान में धनात्मक सहसम्बन्ध, आत्म-प्रत्यय एवं आत्म-प्रभावकारिता में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

आत्मप्रत्यय का अर्थ एवं परिभाषा :-

आत्म-प्रत्यय शब्द एक ऐसा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो मनुष्य की स्वयं की धारणा को विकसित करती है, इसमें मैं क्या हूँ? मैं कौन हूँ की प्रतिमा स्वयं में पनपती है। यह स्वयं के समग्र आकलन को दर्शाती है। दूसरे शब्दों में- आत्म-प्रत्यय शब्द का तात्पर्य उस चित्र या छवि से है जिसे कोई व्यक्ति अपने लिए देखता है। यहाँ आत्म अवधारणा स्वयं के बारे में ज्ञान का संचय है, जैसे शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक विशेषताओं आदि के बारे में विश्वास।

जर्सील्ड (1965), ने आत्म-प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''व्यक्ति की अंदर की दुनिया कहा है। वह इसे एक व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, प्रयासों तथा उम्मीदों, भय तथा कल्पनाओं व अपने महत्व के प्रति दृष्टिकोणों का एक मिश्रित रूप मानता है।'' इस तरह आत्म-प्रत्यय व्यक्ति प्रतिमान के केन्द्र का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। यह व्यक्ति को सुदृढ़ता प्रदान करता है।

हरलॉक (1979), ने आत्म-प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''आत्म-प्रत्यय वे प्रतिमाएँ है जो व्यक्ति स्वयं अपने संबंध में रखते है आत्म-प्रत्यय में व्यक्ति के वे विश्वास होते है जो एक व्यक्ति अपने शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और संवेगात्मक विशेषताओं के संबंध में रखता है। इसमें आकांक्षाएँ और उपलब्धियां भी सम्मिलित होती है।'' संक्षेप में आत्म-प्रत्यय व्यक्ति की वे प्रतिमाएं होती है जो उसके शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के समन्वय से ही होती है।

आइजेन्क एवं उसके साथियों ने (1972), ने आत्म-प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं और गुणों के सम्बंध में उसकी अभिवृत्ति, निर्णयों और मूल्यों के योग को ही आत्म-प्रत्यय कहते है।''

नैल (2005), ने आत्म-प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि ‘‘आत्म-प्रत्यय स्वंय के बारे में प्रकृति एवं संगठित विश्वास है, यह बहुविमीय सिद्धान्त है। लोग अपने शारीरिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक पक्षों के बारे में पृथक विश्वास रखते है।’’

अतः उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आत्म-प्रत्यय अपने आत्म के प्रति दृष्टिकोण है, आत्म-प्रत्यय वे प्रतिमाएँ है जो व्यक्ति स्वयं अपने सम्बन्ध में रखता है, आत्म-प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहार, योग्यताओं और गुणों के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति, निर्णयों और मूल्यों का योग है। अतः आत्म प्रत्यय वह सब कुछ है जो एक व्यक्ति अपने सम्बन्ध में देखता समझता व जानता है। आत्म व्यक्ति का एक अमूर्त रूप है। इस अमूर्त रूप में उन सब गुणों का समावेश हो जाता है जिनके सम्बन्ध में व्यक्ति स्वयं सचेत है।

आत्म-प्रत्यय के घटक :-

आत्म-प्रत्यय के घटकों को मूलतः तीन भागों में बाँटा गया है:-

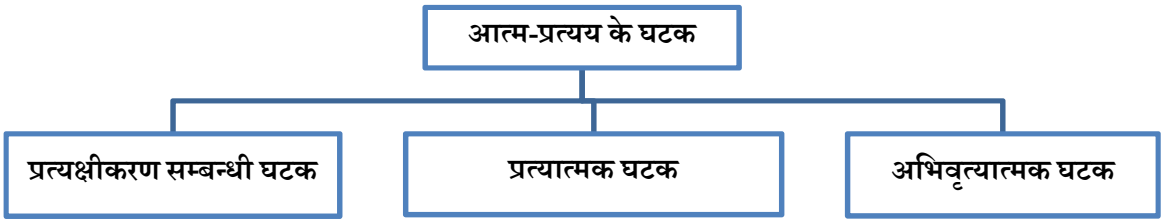

चित्र संख्या 1.0 आत्मप्रत्यय के घटक

1. **प्रत्यक्षीकरण सम्बन्धी घटक-** यह किसी भी व्यक्ति की अपनी शारीरिक तथा दूसरों पर अपने प्रभाव के बारे में मानसिक छवि है, इसे प्रायः शारीरिक आत्म-प्रत्यय भी कहा जाता है।

2. **प्रत्यात्मक घटक-** यह व्यक्ति की अपनी विशिष्ट विशेषताओं, उसकी योग्यताओं एवं आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, साहस एवं इससे विरोधी गुणों से निर्मित होता है इसे मनोवैज्ञानिक आत्म-प्रत्यय भी कहा जाता है।

3. **अभिवृत्यात्मक घटक-** यह किसी भी व्यक्ति की अपने बारे में भावनाएं, उसकी अपनी वर्तमान परिस्थिति एवं संभावनाओं के प्रति दृष्टिकोण है। इसी के साथ यह अपने महत्व के बारे में भावना तथा अपने स्वाभिमान, अपमान, गर्व तथा शर्म, विश्वास, मूल्य, आदर्श, आकांक्षाएँ तथा प्रतिबद्धताओं के प्रति दृष्टिकोण है जो उसके जीवन दर्शन का निर्माण करते है।

शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में आत्म-प्रत्यय का महत्व :-

समाज की वर्तमान परिस्थितियों के लिये गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अति आवश्यकता है गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का कार्य योग्य शिक्षक ही कर सकते है शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिये शिक्षक का उच्च आत्म-प्रत्यय होना आवश्यक है। शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के लिए भी उच्च आत्म-प्रत्यय महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके शैक्षिक प्रदर्शन, शिक्षण क्षमता, शिक्षण दक्षता एवं उनके व्यवसाय में समग्र सफलता को प्रभावित करता है। सकारात्मक आत्म-प्रत्यय उनके आत्मविश्वास एवं उनकी क्षमताओं में विश्वास को बढ़ावा देता है, जिससे बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि और बेहतर शिक्षण प्रभावशीलता प्राप्त होती है। इसके विपरीत, नकारात्मक आत्म-प्रत्यय उनके शैक्षिक प्रदर्शन में बाधा डाल सकता है शिक्षक की अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ने और उन्हें सहायता प्रदान करने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के लिए आत्म-प्रत्यय के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है-

1. **शैक्षणिक प्रदर्शन-** सकारात्मक आत्म-प्रत्यय उच्च शैक्षणिक प्रदर्शन से जुड़ी होती है, क्योंकि शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी शिक्षण की चुनौतियों का सामना करने और सफल होने की अपनी क्षमता पर विश्वास करने की अधिक सम्भावना होती है। इसके विपरीत, नकारात्मक आत्म-प्रत्यय से प्रेरणा में कमी एवं निम्न प्रकार के शैक्षणिक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं, जिससे उनके शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की आवश्यकताओं को पूरा करने की उनकी क्षमता पर असर पड़ सकता है।
2. **शिक्षण प्रभावशीलता-** उच्च आत्म-प्रत्यय शिक्षकों को आत्मविश्वास के साथ अपने विद्यार्थियों से संपर्क करने, कक्षा का प्रबन्धन करने और प्रभावी शिक्षण देने में सक्षम बनाता है। सकारात्मक आत्म-प्रत्यय वाले शिक्षक विभिन्न शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करने और विविध विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने दृष्टिकोण को अनुकूलित करने में अधिक सशक्त महसूस करते हैं। कठिन कक्षा परिस्थितियों का सामना करते समय भी उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने और धैर्य का प्रदर्शन करने की अधिक संभावना होती है।
3. **आत्म-नियमितीकरण एवं अभिप्रेरणा-** प्रभावी आत्म-नियमन कौशल, जैसे लक्ष्य-निर्धारण और रणनीति अनुकूलन, शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। उच्च आत्म-प्रत्यय उन्हें शैक्षणिक चुनौतियों का बेहतर प्रबन्धन करने, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और असफलताओं के बावजूद भी प्रेरणा बनाए रखने में सक्षम बनाता है।
4. **सामाजिक-संवेगात्मक विकास-** सभी व्यक्तियों की तरह शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को भी अपनी शक्तियों और कमजोरियों को समझने के लिए एक स्वस्थ आत्म-प्रत्यय विकसित करने की आवश्यकता है। यह आत्म-सम्मान की सकारात्मक संवेग विकसित करने और मजबूत सामाजिक सम्बन्ध बनाने के लिए आवश्यक है। सकारात्मक आत्म-प्रत्यय शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को कक्षा की

सामाजिक गतिशीलता को समझने तथा विद्यार्थियों और सहकर्मियों के साथ तालमेल बनाने में मदद करता है।

5. **विद्यार्थियों पर प्रभाव-** उच्च आत्म-प्रत्यय वाले शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी अपने विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक एवं सहायक शिक्षण वातावरण बनाने में बेहतर ढंग से सक्षम होते हैं। वे अधिक प्रभावी रोल मॉडल साबित होते हैं, तथा लचीलापन, दृढ़ता और सीखने के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं। उनका सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मविश्वास विद्यार्थियों को अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकता है।
6. **शिक्षक प्रशिक्षकों का महत्व-** शिक्षक प्रशिक्षक अपने शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में सकारात्मक आत्म-प्रत्यय के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे एक सहायक और समावेशी कक्षा वातावरण को बढ़ावा दे सकते हैं जहां शिक्षक-प्रशिक्षणार्थी जोखिम लेने और अपने विचारों को साझा करने में सहज महसूस करते हैं। रचनात्मक प्रतिक्रिया और प्रोत्साहन प्रदान करके, वे शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को अपनी क्षमताओं में आत्मविश्वास उत्पन्न करने और भावी शिक्षक के रूप में सकारात्मक आत्म-छवि विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार उपरोक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि समाज के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिये व्यक्ति का उत्तम व्यवहार होना आवश्यकता है। व्यक्ति के उत्तम व्यवहार के लिये एक कारक आत्म-प्रत्यय है। आत्म-प्रत्यय को हम इस प्रकार समझ सकते है व्यक्ति का आत्म वह है जिसके प्रति हम तत्काल सजग होते है। हम इसे अपने जीवन के केन्द्रीय व निजी क्षेत्र के रूप में मानते है। यह हमारी चेतना, हमारे व्यक्तित्व तथा हमारे संगठन का महत्वपूर्ण भाग है। इस तरह यह हमारे जीवन का केन्द्र है। कि व्यक्ति अपने बारे में क्या विचार या सोच रखता है। वही उसका आत्म-प्रत्यय है। अपने स्वयं के बारे में जो छवि

मस्तिष्क में बनती है वही व्यक्ति का आत्म-प्रत्यय कहलाता है। अतः स्पष्ट होता है कि बालक के जीवन में आत्म-प्रत्यय का बड़ा महत्व होता है। उसके शैक्षिक जीवन, व्यावहारिक जीवन तथा व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से आत्म-प्रत्यय अत्यन्त उपयोगी तथा महत्वपूर्ण होता हैं। शिक्षक, माता पिता अपने स्नेह एवं आत्मीयतापूर्ण व्यवहार, अधिगम व अभिप्रेरणा के द्वारा बालक में उचित आत्म-प्रत्यय का विकास कर सकते हैं। शिक्षण कार्य में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के लिए उच्च आत्म-प्रत्यय महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके शैक्षिक प्रदर्शन, शिक्षण क्षमता, शिक्षण दक्षता एवं उनके व्यवसाय में समग्र सफलता को प्रभावित करता है। सकारात्मक आत्म-प्रत्यय उनके आत्मविश्वास एवं उनकी क्षमताओं में विश्वास को बढ़ावा देता है, जिससे उन्हें बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि और बेहतर शिक्षण प्रभावशीलता प्राप्त होती है। अतः शोध अध्ययन में शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आत्म-प्रत्यय की अवधारणा, आत्मप्रत्यय के तत्व एवं आत्मप्रत्यय के महत्व की चर्चा की गई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

- मुनोहसामी, तुलसीमाणी एट अल. (2025). एक्सप्लोरिंग सेल्फ-एफिकसी, सेल्फ-कांसेप्ट एण्ड सेल्फ-एस्टीम इन ऑनलाइन ट्रेनिंगः ए स्टडी ऑफ ट्रेनी् टीचर डायनामिकर्स. *मलेशियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस एण्ड ह्यूमननिटिर्स*, 10(4), 2504-8562.https://doi.org/10.47405/mjssh.v10i4.3322
- जावेद, जरताशिए कयनात एट अल. (2024). इफेक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस एण्ड सेल्फ-कांसेप्ट ऑन एकेडमिक परफॉर्मेंसः ए सिस्टमैटिक रिव्यु ऑफ क्रॉस कल्चर रिसर्च. *बुलेटिन ऑफ बिजनेस एण्ड इकोनॉमिक्स*, 13(2), 189-199. https://doi.org/10.61506/01.00315

- आर, नटराजा (2023). ए स्टडी ऑन दी सेल्फ-कांसेप्ट ऑफ सेकेन्डरी टीचर ट्रेनीज. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट*, 11(1), 2320-2882.https:// www.ijcrt.org
- सिंह, आस्था एण्ड गुप्ता, लोकेश (2022). आईडेंटिफिइंग दी फैक्टरर्स ऑफ सेल्फ-कांसेप्ट एण्ड दी इफेक्ट ऑफ दी कोविड-19 सिचुएशन ऑन द्इज फैक्टरर्स. *ह्यूमननिटिर्स एण्ड सोशल साइंस स्टडिर्स*, 11(1), 2319-829x. https://www.researchgate.net/publication/358522574
- डेजी, आर एण्ड सेल्वी, पी. मुथुपंडी (2022). ए स्टडी ऑन सेल्फ-कांसेप्ट ऑफ टीचर एजुकेशन प्रोग्राम अमंग बी.एड. ट्रेनीज. *प्रोफेशनलइजेशन ऑफ टीचर एजुकेशन रिसेंट ट्रेंड्स एण्ड फ्यूचर प्रोस्पेक्टिव*, 1.2.3(1), 978.93.94899.85.8. https:// www.shanlaxpublications.com
- नवोसु, किंग्सले चिनजा एण्ड वाहली, डब्ल्यू.पी. (2021). टीचर सेल्फ-कांसेप्ट एण्ड इट् एसोसिएशन विद विलिंग्नेस टू इंक्लूड चिल्ड्रन विद स्पेशल नीडर्स इन रेगुलर क्लासेसः टीचर एंपैथी एज ए मेडिएटर. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल एण्ड सोशल रिसर्च*, 11(2), 2240-0524.http://www.richtmann.org
- सुधा (2021). सेल्फ-कांसेप्ट ऑफ टीचर ट्रेनीज स्टडींग इन प्राइवेट डाइटर्स इन दिल्ली स्टेट. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च*, 10(7), 2277-7881.DOI: http://ijmer.in.doi./2021/10.07.161

- हेरेरा, लुका एट अल. (2020). एकेडमिक अचीवमेंट, सेल्फ-कांसेप्ट, पर्सनैलिटी एण्ड इमोशनल इंटेलिजेंस इन प्राइमरी एजूकेशन. एनालिसिस वय जेंडर एण्ड कल्चरल ग्रुप. *फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी*, 10(1), 3075.doi: 10.3389/fpsyg.2019.03075
- सुमी, वी. एस. (2019). सेल्फ-कांसेप्ट रिसर्च विद टीचर ट्रेनीज: एन इन्वेस्टिगेशन. द *रिसर्चर-इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल*, 5(1), 2455-1503.https:// doi - 10.21276/tr.2019.5.1.AN5
- सैनी, राम प्रकाश (2018). बी0एड0 शिक्षकों एवं अन्य स्नातक स्तरीय शिक्षकों (बी0ए0, बी0एस0सी0 एवं बी0काम0) के आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन. *श्रृखंला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका*, 11(5), 2349-980x. http://www.socialresearchfoundation.com/shinkhlala.php#8
- गुप्ता, एस.पी. (2018). *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*, शारदा पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद
- कौल, लोकेश (2012). *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*, द्वितीय पुनर्मुद्रण, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि., दिल्ली
- माथुर, एस.एस. (2012). *शिक्षा मनोविज्ञान*, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
- अग्रवाल, जे.सी. (2009). *शिक्षा मनोविज्ञान*, शीपरा पब्लिकेशन्स, दिल्ली

*****